

श्री विधि से गेहूँ की खेती



“राष्ट्रीय कृषि विकास योजना”
जिला कृषि कार्यालय नालन्दा

एक झलक



भारत में पहली बार श्री विधि से गेहूँ की खेती

वर्ष 2008 के खरीफ मौसम में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना एवं “आत्मा” नालन्दा के द्वारा धान की श्री विधि की खेती पर विभिन्न प्रत्यक्षण कराये गये किसानों को “श्री विधि” धान से खेती का प्रशिक्षण दिये गये तथा उन्हें “श्री” विधि से धान की खेती करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। किसानों द्वारा अपने प्रत्यक्षण प्लॉटों पर इस विधि से धान की खेती की गई। ऊपज काफी अच्छी हुई। परिणाम उत्साहवर्धक रहा तथा किसानों ने इस विधि से धान की खेती को अपनाने का निर्णय लिया। नालन्दा जिले में “श्री” विधि धान की खेती कोई नई बात नहीं रही।

धान की खेती में श्री विधि की सफलता को देखते हुए “आत्मा” नालन्दा ने वर्ष 2008–09 के रब्बी मौसम में इसी विधि से गेहूँ की खेती करने के तरीके पर एक प्रयोग करने का निर्णय लिया। “आत्मा” नालन्दा के पास **Validation, Adoption & Refinement of Technology** के तहत राशि उपलब्ध थी, जिसका उपयोग इस तरह के कार्यों के लिए किया जाता है। “आत्मा” नालन्दा ने “प्रदान” नामक संस्था के साथ मिलकर राजगीर प्रखंड अन्तर्गत 25 किसानों के छोट-छोटे प्लाटों पर यह प्रयोग किया। प्रयोग सफल रहा। एक किसान मालती देवी, पति श्री शिवबालक बिन्द, गाँव करीमपुर, प्रखंड राजगीर के खेतों में डॉ० एम०सी० दिवाकर, चावल विकास निदेशालय, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार की उपस्थिति में फसल जाँच कटनी की गयी। उपज 79.6 किं०/हे० पाया गया। फसल कटनी के समय आसपास के सैकड़ों किसान एवं प्रेस प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। समाचार पत्रों ने इस खबर को प्रमुखता से अपने पत्रों में प्रकाशित किया।

वर्ष 2009–10 के रब्बी में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, नालन्दा के तहत 20 कृषकों तथा आत्मा, नालन्दा के तहत 80 कृषकों के बीच “श्री” विधि से गेहूँ की खेती का प्रत्यक्षण किया गया। इस वर्ष भी अच्छी उपज पायी गई। उत्पादन 70 किं०/हे० से 85 किं०/हे० के बीच प्राप्त हुआ।

(S R I)

SRI ("श्री") का प्रयोग सर्वप्रथम धान फसल के लिए किया गया था। तदनुसार इसे **System of Rice Intensification** कहा जाता था, परन्तु इस विधि का प्रयोग अन्य फसलों गेहूँ, तेलहन, ईख आदि में सफलतापूर्वक किया गया है। सभी फसलों में इस विधि से उत्पादन में वृद्धि का एक प्रमुख कारण जड़ों का विकास भी है, जो पारंपरिक विधि से ज्यादा होता है। इस कारण "श्री" का अर्थ **System of Root Intensification** हो चुका है।

SRI (Rice) - System of Root Intensification (Rice)

SRI (Wheat) - System of Root Intensification(Wheat)

श्री विधि से गेहूँ की खेती को "गेहूँ की सघनीकरण प्रणाली" (SWI) भी कहा जाता है।



श्री विधि से गेहूँ की खेती क्या है ?

यह गेहूँ की खेती करने का एक तरीका है जिसमें धान की श्री विधि के सिद्धांतों का पालन कर के अधिक उपज प्राप्त किया जाता है। जैसे :-

- **कम बीज दर** : सिर्फ 10 किलोग्राम प्रति एकड़
- बीज उपचार एवं संशोधन
- पौधों के बीच अधिक दूरी (8 ईंच कतार से कतार एवं 8 ईंच पौधा से पौधा)
- 2 से 3 बार वीडर से खरपतवार की निकासी एवं वीडर से कोड़ाई।

फसल की देखभाल सामान्य गेहूँ की फसल की ही तरह की जाती है।

इस तरह गेहूँ की फसल की अच्छी तरह देखभाल करके नालन्दा जिला के किसानों ने औसत 14 किंवटल प्रति एकड़ उपज पायी है, जो उनकी पहले की उपज से लगभग दुगुनी है। वर्ष 2008-09 में लगभग 280 किसानों ने इस विधि को गया एवं नालन्दा जिले में अपनाया है।



श्री विधि से गेहूँ की खेती

बीज एवं बीज का उपचार

बीज का चुनाव : इस विधि के लिए किसी खात बीज की जरूरत नहीं है, आपके इलाके के लिए जो उन्नत बीज अनुशंसित है उसी का प्रयोग करें। अगर अपना बीज पुराना है तो नया बीज खरीद लें।

बीज की मात्रा : 10 किलो प्रति एकड़

बीज का उपचार : 10 किलोग्राम गेहूँ के बीज के उपचार के लिए निम्नलिखित सामान की जरूरत होगी

- 10 किलो गा० उन्नत किस्म के गेहूँ का बीज
- गर्म (सुसुम या गुनगुना) पानी 20 लीटर
- केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) 5 किलो गा०
- गुड़ 4 किलो गा०
- गौमुत्र 4 लीटर (गोमूत्र एक असरदार प्रकृतिक खाद है जिससे अंकुरित होते बीजों को तुरंत पोषण मिलता है)



बीज उपचार करके बीज द्वारा आने वाले रोगों से फसल को बचाया जा सकता है।

बीजोपचार की विधि

- 10 किलो ग्रा0 बीज में से मिट्टी, कंकड़ एवं खराब बीजों को छांट लें।
- 20 लीटर पानी एक बर्तन में गर्म करें (60 डिग्री से0 यानि सुसुम होने तक)
- छांटे हुए बीजों को इस गर्म पानी में डाल दें।
- पानी के उपर तैर रहे बीजों को छानकर हटा दें।
- अब इस पानी में 5 किलो ग्रा0 केंचुआ खाद, 4 किलो ग्रा0 गुड़ एवं 4 लीटर गौमुत्र मिलाकर 8 घंटे के लिए छोड़ दें।
- 8 घंटे के बाद इस मिश्रण को एक कपड़े से छान लें जिससे बीज एवं अन्य मिश्रण घोल से अलग हो जाए, घोल के पानी को फेंक दें।
- बीज एवं अन्य मिश्रण में वेभिस्टीन (कार्बन्डाजिम) फफूंदीनाशक 20 ग्राम मिलाकर 12 घंटे के लिए अंकुरित होने के लिए गीला बोरे में बांधकर छोड़ दें इसी अंकुरित बीज को बोने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।



इस तरह बीज उपचार बीज की बढ़ने की शक्ति को बढ़ाता है और वे तेजी से बढ़ते हैं इसे प्राइमिंग (priming) भी कहते हैं।

खेती की तैयारी

खेत की तैयारी सामान्य गेहूँ की खेती की तरह ही करते हैं।

गोबर खाद 20 क्विंटल या केंचुआ खाद 4 क्विंटल प्रति एकड़ में प्रयोग करना चाहिए। कम्पोस्ट खाद की उचित मात्रा के बिना सिर्फ रासायनिक खाद का प्रयोग करते रहने से खेत की उपज क्षमता घटती जाती है।

अगर खेत में पर्याप्त नमी नहीं है तो बुवाई के पहले एक बार पलेवा करना चाहिए

अंतिम जुताई के पहले 27 किलो ग्रा0 डी0ए0पी0 और 13.5 किलो ग्रा0 पोटाश खाद प्रति एकड़ खेत में छींटकर अच्छी तरह हल से मिट्टी में मिला दें।



श्री विधि से गेहूँ की बुआई

बुआई के समय खेत में अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी होना चाहिए क्योंकि अंकुरित बीज लगाए जा रहे हैं, अगर पर्याप्त नमी नहीं होगी तो अंकुर सूख जायेंगे।

बीजों को कतार में 8 ईंच की दूरी में लगाया जाता है।

इसके लिए एक पतले कुदाली से 8 ईंच की दूरी पर 1 से 1.5 ईंच गहरी नाली बनाते हैं और इसमें 8 ईंच की दूरी पर 2 बीज डालते हैं और उसके बाद मिट्टी से ढंक देते हैं।

एक सप्ताह के बाद जिस जगह बीज नहीं अंकुरते हैं वहाँ नया बीज लगा देते हैं।



खेतों की देखभाल

बुआई के 15 दिनों के बाद एक सिंचाई देना जरूरी है, क्योंकि इसके बाद से पौधों में नई जड़ें आनी शुरू होती है। अगर जमीन में नमी न हो तो पौधा नई जड़ें नहीं बनाएगा और बढ़वार रुक जाएगी।



सिंचाई के बाद 40 किलो ग्रा0 युरिया एवं 4 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट को मिलाकर छींट दें।



सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें साथ ही खर पतवार भी निकाल दें। यह करना अति आवश्यक है नहीं तो सिंचाई और खाद देने के बाद खेत में खर पतवार भर जायेंगे।



इस तरह कोड़ाई करने से गेहूँ के पौधे की जड़ों को लंबा होने में मदद मिलती है और वे मिट्टी से ज्यादा पोषण एवं नमी प्राप्त करते हैं।

खेतों की देखभाल बुआई के 25 दिन

बुआई के 25 दिनों के बाद दूसरी सिंचाई देना चाहिए, क्योंकि इसके बाद से पौधों में नए कल्ले तेजी से आने शुरू होते हैं और नए कल्ले बनाने के लिए पौधों को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होगी।



सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें साथ ही खर पतवार भी निकाल दें। यह करना अतिआवश्यक है नहीं तो सिंचाई देने के बाद खेत में खर पतवार भर जायेंगे।



खेतों की देखभाल बुआई के 40 दिन के बाद

बुआई के 35 से 40 दिनों के बाद तीसरी सिंचाई देना चाहिए, इसके बाद से पौधे तेजी से बड़े होते हैं साथ ही नए कल्ले भी आते रहते हैं। इसके लिए पौधों को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होगी।



इसलिए सिंचाई के तुरंत बाद 15 किलो ग्रा0 युरिया एवं 13 किलो ग्रा0 पोटाश खाद प्रति एकड़ जमीन के हिसाब से छिड़काव करें।



सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें साथ ही खर पतवार भी निकाल दें। इससे मिट्टी ढीली होगी, जड़ों को हवा मिलेगी और पौधे तेजी से बढ़ेंगे।



गेहूँ की फसल में अगली सिंचाई 60, 80 एवं 100 दिनों के अंतराल पर की जाती है। यह समय मिट्टी के प्रकार एवं मौसम पर निर्भर करता है।

ध्यान देने की बात यह है कि फूल आने के समय एवं दाना में दूध भरने के समय पानी की कमी नहीं होनी चाहिए नहीं तो उपज में काफी कमी होती है।



सामान्य विधि से लगाये गये गेहूँ के पौधे

श्री विधि से लगाये गये गेहूँ के पौधे



फूल आना एवं दाना में दूध भरने का समय एक महत्वपूर्ण अवस्था है इस समय पानी की कमी बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।

श्री विधि से गेहूँ की उपज

वर्ष 2008–09 में नालन्दा जिला के 278 किसानों ने श्री विधि से गेहूँ की खेती की



इन किसानों की औसत उपज 14 क्विंटल प्रति एकड़ हुई, जबकि पारंपरिक विधि से इन्हीं किसानों को 5.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज प्राप्त हुई।



श्री विधि से प्राप्त अधिकतम उपज 30 क्विंटल प्रति एकड़ हुई जबकि परंपरागत विधि से अधिकतम उपज 8 क्विंटल प्रति एकड़ थी।



ये आंकड़े सबूत हैं कि श्री विधि गेहूँ की खेती के लिए भी एक उन्नत पद्धति है।

श्री विधि से खेती करने पर अधिक उपज क्यों होती है ?

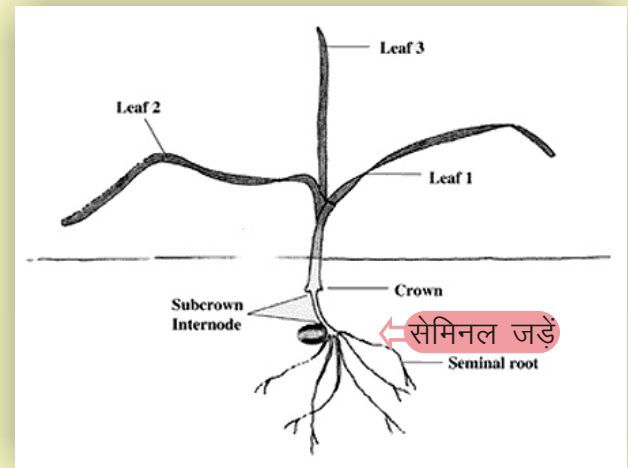
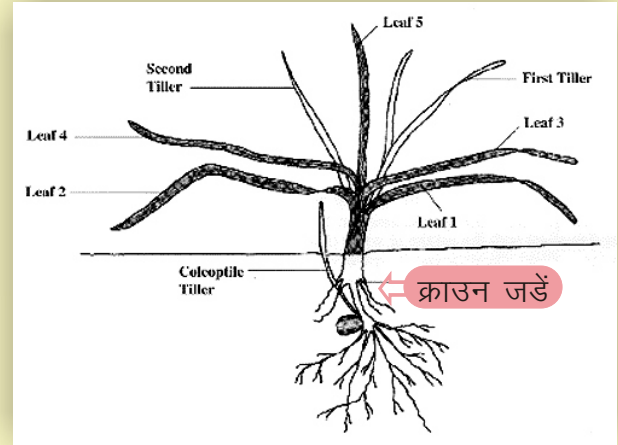
● इसे समझने के लिए हमें पहले गेहूँ के पौधे की जड़ों को जानना होगा

● अंकुरण के बाद गेहूँ के पौधे में सेमिनल जड़ें निकलती हैं जो पानी एवं भोजन की तलाश में मिट्टी में नीचे की ओर तेजी से बढ़ती हैं, अगर मिट्टी सख्त है तो वे ज्यादा नीचे तक नहीं जा पाती हैं।

● 20 दिन के बाद मिट्टी की सतह के ठीक नीचे क्राउन जड़ें निकलती हैं जो पानी एवं भोजन की तलाश में चारों तरफ फैलती हैं। अगर मिट्टी सख्त है तो वे ज्यादा फैल नहीं सकती है और नन्हें पौधे को पर्याप्त भोजन एवं पानी नहीं मिलता है।

● जड़ों पर सख्त मिट्टी के प्रभाव को बॉन्साई प्रभाव (Bonsal Effect) कहते हैं।

● कभी-कभी मिट्टी के नीचे पिथियम फफूंद (Pithium) के आक्रमण से भी जड़ें खराब हो जाती हैं।



श्री विधि में मिट्टी को बार-बार ढीला करने से जड़ें ज्यादा बढ़ती हैं और पौधे को शुरू से ही पर्याप्त पोषण एवं नमी प्राप्त होती है साथ ही खरपतवार भी कम हो जाते हैं ।

बीज उपचार के कारण जड़ में लगने वाले रोग की रोकथाम हो जाती है ।

गौमुत्र नवजात पौधे के लिए प्राकृतिक खाद का काम करता है ।

8 ईंच की दूरी पर बोन से प्रत्येक पौधे के लिए पर्याप्त जगह मिलती है जिससे उनमें आपस में पोषण, नमी एवं प्रकाश के लिए प्रतियोगिता नहीं होती है ।

परंपरागत विधि

श्री विधि



श्री विधि से खेती करने पर कितना खर्च आता है ?

एक एकड़ जमीन में श्री विधि एवं परंपरागत विधि के खर्च की तुलना इस तरह है :

विवरण	मात्रा		दर	खर्च (रु०)	
	परंपरागत विधि	श्री विधि		परंपरागत विधि	श्री विधि
बीज	50 किलो ग्रा०	10 किलो ग्रा०	रु. 15 / किलो ग्रा०	750	150
बीज उपचार				0	165
डी ए पी	27 किलो ग्रा०	27 किला ग्रा०	रु. 12 / किलो ग्रा०	324	324
पोटाश	27 किलो ग्रा०	27 किलो ग्रा०	रु. 6 / किलो ग्रा०	162	162
युरिया	55 किलो ग्रा०	55 किलो ग्रा०	रु. 6 / किलो ग्रा०	330	330
वर्मीकम्पोस्ट	0	400 किलो ग्रा०	रु. 4 / किलो ग्रा०	0	1600
सिंचाई	5 सिंचाई	5 सिंचाई	रु. 200 / सिंचाई	1000	1000
कोड़ाई	10 मजदूर दिवस	20 मजदूर दिवस	रु. / 60 मजदूर दिवस	600	1200
कुल नगद खर्च				3166	4931
कुल उपज (क्विंटल)				8	14
कुल आमदनी खर्च काटकर (रु०)				3234	6269

- इस तरह हम देखते हैं कि पारंपरिक विधि से गेहूँ उपजाने का खर्च 396 रु० प्रति क्विंटल है जबकि श्री विधि का खर्च 352 रु० प्रति क्विंटल है।
- श्री विधि से खेती करने पर लगभग 3000 रुपये प्रति एकड़ की अतिरिक्त आमदनी होती है।

श्री विधि पालन करने के लिए आवश्यक बातें

- 10 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज दर
- गर्म पानी, गौमूत्र, वर्मीकम्पोस्ट एवं वेभिस्टीन से बीजोपचार एवं अंकुरण
- कतार से कतार 8 ईंच एवं बीज से बीज की दूरी 8 ईंच
- एक जगह पर 2 बीज डालें
- कम से कम 2 बार रोपाई के 20 एवं 30 दिन पर कोड़ाई एवं खरपतवार का नियंत्रण
- फूल आने एवं दाना में दूध भरने के समय सिंचाई देने की यवस्था

श्री विधि विशेष कर छोटे एवं गरीब किसानों के लिए ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि वे बहुत कम जमीन में खेती करते हैं और उन्हें ज्यादा अनाज की जरूरत होती है। श्री विधि अपनाकर वे अपने परिवार की जरूरत पूरी करने के साथ कुछ बेचकर आमदनी भी कर सकते हैं। अपने खेतों में वे खुद श्रम करके खर्च भी बचा सकते हैं।

नालंदा के किसानों ने किया प्रति एकड़ रिकार्ड उत्पादन

गेहूं उत्पादन में पंजाब को भी पछाड़ा

आशुतोष कुमार आर्य राजगीर

गेहूं उत्पादन में अक्वल की बात की जाए तो निरचय ही पंजाब का नाम पहले पायदान पर हर कोई लेगा। परंतु नालंदा के कुछ किसान प्रति एकड़ गेहूं उत्पादन में पंजाब से भी दो कदम आगे बढ़ गए हैं। 'श्री' (एसआरआई, सिस्टम ऑफ राईस इंटेग्रेटिव फिफिकेशन) विधि से धान के रिकार्ड उत्पादन से उत्साहित यहां के किसानों ने 'स्वी' (एसडब्ल्यूआई, सिस्टम ऑफ व्हीट इंटेग्रेटिव फिफिकेशन) पद्धति से गेहूं का उत्पादन किया। उत्पादित गेहूं की मात्रा से यहां के किसानों व वैज्ञानिकों के माथे तो टनके ही, योजना आयोग ने इसे 'मिराकल' के रूप में लिया।

योजना आयोग में भारत सरकार के कृषि विभाग के डीआरडी निदेश-

क डॉ. एमसी दिवाकर को बुलाकर 'स्वी' विधि की विस्तृत जानकारी ली। आयोग ने गेहूं अनुसंधान केंद्र, करनाल के कृषि वैज्ञानिकों के साथ अपने कुछ सदस्यों को नालंदा भेजने का निर्णय लिया है।

'प्रदान' नामक संस्था के सहयोग से 'आत्मा' नालंदा ने नमूने के तौर पर जिले के 41 किसानों के माध्यम से गेहूं की खेती करवाई।

राजगीर प्रखंड के करमपुर की किसान मालती देवी ने 79.6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गेहूं का रिकार्ड उत्पादन किया। प्रदान के तकनीकी अधिकारी अनिल कुमार वर्मा व डीएओ सुदामा महतो ने बताया कि साधारण विधि से 0.6 से 2 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है जबकि 'स्वी' तकनीक से प्रति हेक्टेयर छह से आठ टन उत्पादन

मेहनत रंग लायी

- एसडब्ल्यूआई विधि की योजना आयोग ने सराहा
- योजना आयोग व करनाल के कृषि वैज्ञानिक नालंदा आएंगे
- गोमूत्र समेत अन्य प्राकृतिक संसाधनों का कर रहे प्रयोग
- साधारण विधि से खर्च कई गुणा कम, उत्पादन 5 गुणा

संभव है। तकनीकी अधिकारी बताते हैं कि इस विधि में 8 से 13 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज का उपयोग किया जाता है जबकि साधारण पद्धति में 54-81 किलोग्राम का। 'स्वी' पद्धति में सर्वप्रथम बीज की उससे दोगुना

पानो (गुनगुने) में 7-8 घंटे तक रखते हैं। तैरने वाले बीज को फेंक दिया जाता है। शेष बीज को अलग कर उसे वर्मी कम्पोस्ट, गुड़ व गोमूत्र से उपचारित किया जाता है। बाद में कैवैस्टिन से शोधन कर भीगा बोड़ा (टाट) में बीज को अंकुरण करा 6-7 सेंटीमीटर अंदर मिट्टी में बुआई कर दी जाती है। एक स्थान पर दो बीज तथा थल्ले से थल्ले की दूरी 20 सेंटीमीटर रखते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए कम खर्च में पांच गुना तक उत्पादन सहज तरीके से लिया जा सकता है।

श्री वर्मा बताते हैं कि उत्पादन को दस गुणा करना उनका लक्ष्य है। डीएओ श्री महतो बताते हैं कि पंजाब में औसत उपज 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होता है जबकि राजगीर

में 79.6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर गेहूं के उत्पादन कर यहां के किसानों ने कृषि वैज्ञानिकों को भी चकित कर दिया है। डीएओ ने बताया कि अगले मौसम में इस विधि का विस्तार पूरे जिले में किया जायेगा।

पछुआ ने बढ़ाई मुश्किलें

बिहारशरीफ (हि.प्र.) जिले में अगलगी की घटनाओं में पछुआ हवा के झोंके व जर्जर विद्युत तार ने अहम भूमिका निभाई है।

पछुआ हवा ने आम पर काबू पाने के प्रयत्नों के प्रयास को जहाँ नाकाम कर दिया, वहीं विद्युत तार टूटने व उसकी चिंगारी से कई जगहों पर अगलगी की घटनाएं हुईं। भीषण गर्मी के कारण इन दिनों जिले में अगलगी की घटनाएं काफी हो रही हैं।

12 April 2010 12 अप्रैल 2010

नालंदा की धरती उगलने लगी सोना

प्रति हेक्टेयर 85 क्विंटल गेहूं की पैदावार के साथ नालंदा ने पंजाब को भी पछाड़ा

आशुतोष कुमार आर्य

बिहारशरीफ

बढ़ते तापमान के कारण चौपट होती खेती जहां कृषि वैज्ञानिकों की चिंता में डूबो दी है, वहीं गेहूं की 'स्वी' विधि (सिस्टम ऑफ व्हीट इंटेग्रेटिव फिफिकेशन) से धरती सोना उगलने लगी है। गेहूं की पैदावार में नालंदा ने पंजाब को भी पछाड़ा दिया है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन तथा आत्मा के सहयोग से जिला कृषि विभाग ने सो एकड़ में 'स्वी' विधि द्वारा गेहूं

की फसल लगायी थी। परबलपुर के धनावां, नुरसराय के दरूआरा, चंडी व चैनपुर में फसल की हुई कटनी से यह आंकड़ा मिला कि सामान्य विधि से 'स्वी' पद्धति में करीब दोगुना से भी अधिक उपज हुई। कृषि वैज्ञानिक व

खाद्य सुरक्षा मिशन के एहवाहजर कुमार किशोर नंदा ने बताया कि सामान्य विधि से 42 क्विंटल प्रति हेक्टेयर जबकि स्वी विधि से 85 क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ। सामान्य विधि में एक थल्ले में 34 कल्ले (शाखाएं) जबकि

स्वी विधि में 54 कल्ले निकले। वहीं एक बाली में क्रमशः 46 व 86 दाने हुए। जबकि सामान्य विधि से स्वी पद्धति में एक चौथाई बीज का ही उपयोग किया गया। चैनपुर के किसान सत्येन्द्र नारायण सिंह, चंडी के जयनारायण, धनावां के अनंत कुमार, उदय नंदन प्रसाद, श्रीकिशोर प्रसाद, देवेन्द्र कुमार, सुरेश प्रसाद, प्रमोद कुमार, दरूआरा के संजय कुमार, संजय पासवान, आलमगीर बताते हैं कि स्वी विधि किसानों के लिए वर्दान साबित हो रही है। परंतु दो-दो बीज की चुटकी से बुआई करना एक कठिन कार्य है। अधिकारी बताते हैं बीज देर से नहीं मिलती तो उपज 90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के आंकड़े को भी पार कर जाती।



कृषि वैज्ञानिक की देखरेख में गेहूं की कटाई करता किसान।



पटना, शुक्रवार, 9 अप्रैल, 2010

धनावां के किसान ने एक हेक्टेयर में पैदा की 71 क्विंटल गेहूं

(बिहारशरीफ कार्यालय)

बिहारशरीफ (नालंदा)। कृषि विभाग द्वारा किसानों को कम समय में अधिक फसल उपजाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों द्वारा लतातर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसका ही नतीजा हुआ कि परबलपुर प्रखंड के धनावां गांव के एक किसान ने गेहूं की रिकार्ड उपज की। आत्मा नालंदा द्वारा प्रत्येक्षण के लिए गेहूं एवं अन्य उत्पादन उपलब्ध कराया गया था। जिसमें कृषि वैज्ञानिक कुमार किशोर नंदा ने श्री विधि द्वारा गेहूं की खेती के लिए समय-समय पर मार्गदर्शन देते रहे। शुक्रवार को परबलपुर प्रखंड के धनावां गांव में गेहूं की उपज की जांच किया गया। जिसमें उदय प्रकाश ने रिकार्ड उपज की। उक्त किसान ने 71 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गेहूं उपजाया।

जिला कृषि पदाधिकारी सुदामा महतो ने बताया कि श्रीविधि से गेहूं की खेती आने वाले दिनों में मील का पथर साबित होगा। अब जिले के किसान कम समय में श्रीविधि द्वारा अधिक से अधिक फसल उपजा सकेंगे।

